कविता

खतरा

– कुमार विकल

जब तब अखबारों में
क़ीमतों के और बढने की
खबर आती हैं
और घर के छोटे-छोटे
खर्चों को लेकर
मेरी पत्नी और मेरे दरम्यान
गृह युद्ध शुरू हो जाता है
तो देश की सरहदों पर
दुश्मनों की फौजें
खड़ी कर दी जाती है-
देश खतरे में है
चीज़ों की बढ़ती
क़ीमतों को भूल जाओ
राशन की दुकानों पर
लम्बी क़तारों की ओर मत देखो
देखो सिर्फ देश की सरहदों पर
तैनात दुश्मनों की फौजों को।
तुम्हारे गृह-युद्ध से देश को
इतना खतरा है
जितना दुश्मनों की फौजों से
तुम अपनी पत्नी को
समझा क्यों नहीं सकते
अपने खर्चे कुछ घटा
क्यों नहीं सकते
मसलन, बच्चों को स्कूल
भेजना छोड़ दो
पढ़ने लिखने में क्या रखा है
जबकि तुम्हारे वर्ग का हर बच्चा
हाथ-पांव के धंधों में
बहुत पक्का है।
अपने मेहनतकश बच्चों को घर का बोझ उठाने
का प्रोत्साहन दो और खुद देश की सरहदों की ओर
ध्यान दो
ध्यान
देश की सरहदों की ओर तो जाता है
लेकिन हर बार
रास्ते से लौट आता है
और श्वास-रोग से
पीड़ित पत्नी के साथ
घर की रसोई में उलझ जाता है।
मेरी आंखों में दोपहर के
भोजन का लालच है
लेकिन रसोई का चूल्हा
मुझे लजाता है
अलबत्ता बच्चे
'दोपहर का भोजन' कर रहे हैं
बासी रोटियों को लेकर
आपस में लड़ रहे हैं
साथ में मां की
हड्डियों को चबा रहे हैं
एक आदमी को
गालियां सुना रहे हैं।
मेरा ध्यान पत्नी की हड्डियों
और बच्चों की
गालियों की ओर जाता है
लेकिन हर बार
देश की सरहदों
पर लौट आता है
जहां दुश्मन की फौजें
तैनात हो चुकी हैं
और देश खतरे में है।

कम्पनी में गेट मीटिंग का महत्व

पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजीपति मज़दूरों के श्रम की लूट को जारी रखने के लिये और मुनाफ़े को बढ़ाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाता है तो मज़दूर भी उसके इन हथकण्डों के ख़िलाफ़ प्रतिरोध करता है और संघर्ष जारी रखता है। पूंजीपतियों को उसने कई बार पीछे हटने के लिए मजबूर किया है। इन संघर्षों के दौरान जैसे-जैसे पूंजीपति वर्ग आक्रामक हुआ और उसने अपने तौर-तरीके बदले वैसे-वैसे मज़दूर वर्ग ने भी अपने संघर्ष के तरीके बदले। उनमें से एक तरीका है गेट मीटिंग का।

जब किसी कम्पनी में मज़दूर अपनी मांग के लिए संघर्ष करते थे तो कम्पनी के बाहर धरना देते थे या अपनी एकता प्रदर्शित करने के लिए शिफ्ट के बाद कम्पनी के गेट पर ही खुली मीटिंग की जाती थी जिसमें कम्पनी प्रबंधन के लिए साफ़-साफ़ संदेश होता था कि हम सब मज़दूर एक हैं और हम अपना शोषण नहीं सहेंगे और अपनी मांगे मनवा लेंगे।

गेट मीटिंग के लिए अन्य कम्पनियों के मज़दूरों से भी संपर्क किया जाता था और मज़दूरों की कौमी एकता को प्रदर्शित किया जाता था। और उस मीटिंग में प्रबंधक वर्ग से कोई ठोस आश्वासन या समझौता कर ही मीटिंग को समाप्त किया जाता था और साथ ही मज़दूर वर्ग व्यवस्था के अन्य लूट के अंगों से टक्कर लेता था। और अपनी जीत की तरफ कदम बढ़ाता था।

परन्तु समय बीतने के साथ-साथ ट्रेड यूनियन के बड़े-बड़े पदाधिकारियों ने मज़दूर वर्ग के आंदोलन की धार को कुंद करने का काम किया है। मज़दूर आंदोलन को वर्ग संघर्ष के तौर पर न विकसित कर समझौते के तौर पर चलाने का काम किया है। मज़दूरों की सामूहिकता की सोच को निम्न से निम्न स्तर पर पहुंचाने का काम किया है और इसलिए उनके द्वारा किये गये कार्यक्रम भी अनुष्ठान बन कर रह गये हैं। और इसके लिए उन्हें मज़दूरों की लूट से एक छोटा सा हिस्सा मिलता रहा है।

इसके फलस्वरूप अब मज़दूरों का एक छोटा हिस्सा ही गेट मीटिंग में आता है और खुद संघर्षरत कम्पनी के मज़दूर ही इसमें कम रुचि रखते हैं क्योंकि इस तरह की प्रक्रिया से वे कई बार गुजर चुके हैं। गेट मीटिंग पर आये हुए प्रधान लोग अपनी-अपनी बातें रखते हैं, आर्थिक मदद की अपील करते हैं लेकिन बिना किसी ठोस निष्कर्ष के बिना प्रबंधक वर्ग व श्रम विभाग को कोई गम्भीर चेतावनी के और न ही संघर्षरत मज़दूरों के लिए ठोस योजना के मीटिंग खत्म हो जाती है। मज़दूर अपने-अपने घर चले जाते हैं तथा संघर्षरत कम्पनी के मज़दूर अकेले रह जाते हैं।

अभी हाल ही में 2 अप्रैल को बजाज मोटर्स के गेट पर एचएमएस द्वारा मीटिंग बुलाई गयी। बजाज मोटर्स के मज़दूर पिछली 24 फरवरी से कम्पनी के बाहर धरने पर बैठे हैं। इस कम्पनी ने यूनियन पदाधिकारी समेत 15 मज़दूरों का गेट बंद कर दिया जिसके चलते लगभग सभी स्थाई मज़दूर धरने पर बैठ गये और उसी दिन कई कम्पनियों के यूनियन पदाधिकारी के साथ सैकड़ों मज़दूरों ने गेट पर अपने आक्रोश को व्यक्त किया। तभी से डीएलसी, एएलसी और कई विभागों के चक्कर मज़दूर काट रहे हैं और अपने धरने को जारी रखे हुए हैं। मज़दूरों को श्रम विभाग व एचएमएस के पदाधिकारियों की तरफ़ से केवल आश्वासन ही मिलते रहे हैं। और अंततः 2 अप्रैल को जब एचएमएस ने गेट मीटिंग बुलायी तो दो-ढाई घंटे की सभा कर कुछ चंदे की घोषणा के साथ मीटिंग समाप्त कर दी। जिसमें कई मज़दूर न समझने की स्थिति में ही रहे। ऐसे में मज़दूरों को इन केन्द्रीय ट्रेड यूनियन के चरित्र को समझा होगा और आंदोलन में समझौतावादी चरित्र को छोड़कर वर्ग संघर्ष के रूप में समझना होगा तथा लड़ाई के तरीकों को उसी हिसाब से विकसित करना होगा। मज़दूर इस काम में जितनी देरी करेगा और संघर्ष में पीछे हटेगा उसको उतना ज्यादा कष्ट उठाना पड़ेगा और उसकी मुक्ति का दिन पीछे खिसकता जायेगा।

एक मज़दूर कार्यकर्ता, गुड़गांव

तिरस्कार झेलने को अभिशप्त नारी

रतीय समाज में जहां महिलाओं को देवी स्वरूप माना जाता है, यह बात कितनी सच है कि देवी को पैदा होने से पूर्व ही मार डाला जाता है। बलात्कार होते हैं। दहेज के लोभी दहेज के लालच में महिलाओं को जिन्दा जला डालते हैं। आये दिन घर में रिश्तेदारों से लेकर पड़ोस, स्कूल, ऑफ़िस हर जगह उसके साथ छेड़खानी की जाती है। क्या किसी देवी के साथ इस प्रकार का व्यवहार होना चाहिये। हां, देवी शायद इस रूप में कहा जाता है जिस तरह मंदिर में कोई मूर्ति होती है। उसके आगे कितना ही चिल्लाया जाए, रोया जाए या उसको तोड़ दिया जाए, वह कोई आवाज नहीं करती। वह कुछ नहीं कहती। उसके साथ बुरा हो या भला।

हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। सरकार महिला सशक्तिकरण का ढोल पीटकर या अभिजात वर्ग की महिलाओं को आदर्श रूप स्थापित कर यह विश्वास दिलाती है कि सब ठीक है। पर सत्य क्या है। वह महिलाओं से ज़्यादा कौन जान सकता है।

महिलाओं की आजादी की बात करते ही-''आप तो परिवार को तोड़ डालना चाहते हैं। यदि औरत मुक्त हो जायेगी तो बच्चों का क्या होगा''?

फ़िर घर के काम कौन करेगा, समाज में अराजकता फैल जायेगी। इत्यादि सवाल खड़े होने लगते हैं। जो समाज सदियों से औरत को स्वतंत्रता के अयोग्य मानने का अभ्यस्त है (ना स्त्री स्वतंत्रताम् अर्हते- मनुस्मृति), जहां अकेले घर से बाहर निकलने वाली औरत 'चालू' और 'चरित्रहीन' समझी जाती रही है। वह समाज औरत के साथ 'मुक्ति' या 'आज़ादी' जैसे शब्दों को भला कैसे बर्दाश्त कर सकता है।

हमारे समाज में औरत की भूमिका सिर्फ़ परिवार के भीतर तक सीमित की गयी है। घर के बाहर के कामों की जिम्मेदारी मर्दों की होती है जबकि परिवार के सारे काम-खाना बनाना, झाड़ू-पोंछा, कपड़े धोना, बच्चे पालना इत्यादि औरतों की जिम्मेदारी होती है। समाज के भीतर औरत किसी की मां पत्नी या बेटी के रूप में जानी जाती है। उसकी अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं होती। सास-ससुर, जेठ-जेठानी, ननद देवर, पति और बच्चों तक ही उसकी जिन्दगी सीमित होती हैं। यह परिवार एक लक्ष्मण रेखा है जिसे लांघने की औरत को इजाजत नहीं है। अगर कोई औरत सामाजिक कामों में भागीदारी करना चाहती है तो सबसे पहले उसे अपने परिवार में ही संघर्ष करना पड़ता है।

''हमारे घर में किसी चीज़ की कमी है जो तुम नौकरी करना चाहती हो? मर्द के होते हुए औरत कमाए''। बाहर काम करने में परिवार की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उसे हतोत्साहित किया जाता है।

परिवार की इसी सीमा के भीतर औरतों पर नृशंस अपराध होते हैं। जिन्हें वे परिवार की इज्जत, मर्यादा के नाम पर चुपचाप बर्दाश्त करने को विवश होती हैं। परिवार में औरत की हैसियत क्या है, इसे पारिवारिक सम्पत्ति में या तो औरत का कोई हक नहीं होता या बहुत कम होता है। पुरुष की दासी और पुरुष उसके ऊपर शासन करने वाला निरंकुश शासक है।

जो लोग औरतों की स्वतंत्र होने की इच्छा को परिवार के विघटन के लिये दोषी मानते हैं वे आज यथार्थ को देखने और स्वीकार करने को तैयार नहीं है। यह समाज कभी इस पर नहीं सोचता कि परिवार तोड़ने वाले मुख्यतः पुरुष ही होते हैं। पुत्र न होने पर औरत को प्रताड़ित करने और पति की दूसरी शादी परिवार तोड़ना नहीं माना जाता। नशा करने वाले, अपनी जिम्मेदारी से जी चुराकर तरह-तरह के ब्यस्नों में लिप्त रहने वाले, यहां तक कि रखैल रखने वाले पुरुष को भी चुपचाप सहन करने का उपदेश औरत को ही दिया जाता है। इन्हें परिवार तोड़ने की कार्यवाही नहीं माना जाता।

यहां पर हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि स्वतंत्रता का सवाल स्त्री-पुरुष के लिये आवश्यक है। हमारा शासक वर्ग स्त्री व पुरुष के बीच इन सवालों पर हमें उलझाये रखना चाहता है। वह समस्या का समाधान नहीं करता। मानव समाज में नारी की पराधीनता शुरुआत से ही थी। शास्त्र पुराण में भी नारी पराधीनता की चर्चा है, जैसे भगवान शंकर ने अपनी पत्नी सती का त्याग किया। भगवान राम ने मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हुए अपनी धर्म पत्नी सीता को गर्भावस्था में घर से बाहर निकाल दिया। तो समाज इसी परम्परा के अनुसार चलने लगा।

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी मां से तो बार-बार मिलते हैं वहीं अपनी पत्नी को इतने दिनों तक पीछे क्यों छोड़ दिया? फ़िर भी पत्नी कहती है कि वे मुझको बुलायेंगे तो मैं उनके पास जरूर जाऊंगी, नरेन्द्र मोदी इतना सब कुछ होने के बावजूद भी अपनी पत्नी को पास बुला लेता तो इससे जनता के नज़रों में स्नेह और विश्वास बढ़ जाता। खून का रिश्ता जन्म से शुरू होता है, पति-पत्नी का रिश्ता सात फेरों से शुरू होता है। जो इन्सान पत्नी को इतना पीछे छोड़ गया, वो देश को कितना पीछे छोड़ सकता है?

जबकि यशोदाबेन ने मोदी को प्रधानमंत्री पद पर देखने के लिए चारों धाम की यात्रा और पैदल पांव का व्रत तक रखा। भला, बुरा जो भी है पति मेरा देवता है! आज आधुनिक समाज में महिलायें उत्पीड़न के साथ शोषण की शिकार भी है। एक तरफ़ घरेलू हिंसा तो दूसरी तरफ़ कार्यस्थलों में कम आमदनी। महिलाओं के साथ पुरुष भी पूंजीपतियों द्वारा कमाये गये अकूत मुनाफ़े की हवस का शिकार हैं। इसलिए स्त्री-पुरुष को मिलकर इस पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ़ धावा बोलकर नयी समाज व्यवस्था 'समाजवाद' को लाने की जरूरत है। समाजवाद ही एक ऐसी व्यवस्था है जो महिलाओं को घरेलू काम से मुक्त कर सामाजिक काम में लगायेगा बूढ़े-बच्चे की जिम्मेदारी शासक वर्ग की होगी। तब ही स्त्री पुरुष के मधुर संबंध स्थापित होंगे व महिलाओं की वास्तविक स्वतंत्रता मिल पायेगी। जिसे पूंजीपति वर्ग अपने मुनाफ़े की हवस के चलते कभी नहीं करेगा।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें।

कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204।